कोरोना काल में पढ़ने की नयी राह

– दीपा जोशी

मैं एक शिक्षक हूं और रचनात्मक के साथ-साथ चिंतनशील भी होना मेरे लिए जरूरी है क्योंकि मुझे ही वो रास्ते तैयार करने हैं जिन पर चलकर देश का सुन्दर भविष्य बनेगा।

मैं एक शिक्षक हूं और रचनात्मक के साथ–साथ चिंतनशील भी होना मेरे लिए जरूरी है क्योंकि मुझे ही वो रास्ते तैयार करने जिन पर चलकर देश का भविष्य बनेगा।

मार्च 2020 का समय था जब कोरोना महामारी की गंभीरता को देखते हुए विद्यालय बंद हो गए थे। एक हफ्ते में जनता कर्फ्यू और फिर सम्पूर्ण लॉकडाउन घोषित कर दिया गया। ये सब इतनी तेजी के साथ हुआ कि किसी को संभलने का अवसर ही नहीं मिल पाया। विद्यालय के बच्चों से भी संपर्क करने में दिक्कत हो रही थी। कुछ बच्चों से फोन पर संपर्क किया उनके माता–पिता से भी बात की और उनका मनोबल बढ़ाने का हर संभव प्रयास किया। समस्या यह थी कि अब घर बैठे क्या किया जाय। नियमित कार्यों को करने के बाद जो समय मिल रहा था उसमें कुछ किताबें व एनसीईआरटी की पाठय पुस्तकों को पढ़ा। पढ़ने के साथ–साथ कुछ रचनात्मक कार्य भी किए।

चूंकि मैं एक शिक्षक हूं मुझे रचनात्मक होने के साथ–साथ चिंतनशील भी होना है क्योंकि मुझे ही वो रास्ते तैयार करने हैं जिन पर चलकर देश का सुन्दर भविष्य बनेगा। कई प्रकार से अपने आपको व्यस्त रखने के बाद भी जब मन कुछ तलाश कर रहा था उसी बीच अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के एक साथी का फोन आया कि ''आप कुछ सुझाव दीजिये कि इस लॉकडाउन के समय का सदुपयोग कैसे किया जाय? एक पल को तो लगा कि मैं कहीं सपना तो नहीं देख रही हूं लेकिन अगले ही पल मैं सचेत हो गयी और सर की बातें ध्यान से सुनने लगी। उन्होंने बताया कि हम ब्लॉक में एक ऐसे समूह के गठन के बारे में सोच रहे हैं जो इस विषम परिस्थिति में हमें कुछ रचनात्मकता की ओर ले जाए, क्या आप इसका हिस्सा बनना चाहेंगी मुझे तो मानो पंख लग गए इससे बेहतर कोई दूसरा विकल्प हो ही नहीं सकता था मैंने तुरंत अपनी स्वीकृति दे दी। इस प्रकार मैं काशीपुर ब्लॉक में बनाए गए समूह 'पढना जरा सोचना' से जुड़ गयी।

इसी प्रकार की गतिविधि जिले स्तर पर बने 'सृजन समूह' में भी चल रही थी, कुछ समय बाद मैं इस समूह से भी जुड़ गयी। इन दोनों समूहों के साथ जुड़कर मुझे ऐसा महसूस हुआ कि आखिर पढ़ना क्या होता है?

वास्तव में इन समूहों का उद्देश्य यही रहा कि इस दिशाहीन परिस्थिति में कुछ सकारात्मक प्रयास करें और अपने विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाते हुए उन्हें सही मार्गदर्शन दे सकें। 'पढ़ना जरा सोचना' समूह में तकरीबन पच्चीस साथी शामिल हैं। इस समूह के द्वारा मैंने माइक्रोसॉफ्ट टीम एप के जरिए के ग्रुप कॉल में बात करना सीखा। यह मेरे लिए एक अभिनव अनुभव ही था द्य इन समूहों में मैंने विभिन्न प्रकार की रचनाएं पाठय सामग्री पढ़ने को मिली जिससे मैं पहले कभी नहीं गुजरी थी। समूह में सबसे पहले मैंने राजेश जोशी की "ताला सुधारने वाला" कविता पढ़ी, यह बहुत ही दिलचस्प कविता थी। कई बार हम कविता पढ़ते हुए उसके भीतर छिपे संदेशों को तलाशना शुरू कर देते हैं जबकि ऐसा जरुरी नहीं होता। कुछ कविताओं को केवल भाषा के खूबसूरत रूप में भी देखा जा सकता है।

ये समूह संचालन में बहुत सहज थे। इनकी प्रक्रिया में गति लाने के लिए पहले कुछ लेख समूह में साझा किए

गए, उन पर ग्रुप के सदस्यों ने अपनी–अपनी प्रतिक्रिया जो लेख के संदर्भ में थी समूह में साझा करनी थी। इस प्रक्रिया के दो मुख्य फायदे हुए एक तो स्वयं की प्रतिक्रिया का मूल्यांकन हो रहा है अर्थात जो बात मै स्वयं कह रही हूं उस पर फिर से गौर किया जा रहा है, साथ ही दूसरी तरफ हम संबंधित लेख पर अन्य साथियों की प्रतिक्रियाओं के द्वारा स्वयं के दृष्टिकोण को विस्तार दे सकते हैं।

हमारे इन समूहों में किन गतिविधियों को किस रूप में संचालित किया गया, सच कहे तो इन समूहों के माध्यम से ही यह समझ बन सकी कि आखिर पढ़ना क्या है? ऐसा नहीं था कि मैं इससे पहले कुछ पढती नहीं थी बेशक पढ़ती थी लेकिन मैं पढ़ने का तत्व नहीं निकाल पाती थी कि जो कुछ भी मैंने पढ़ा उसमें क्या बातें विशेष तौर पर कही जा रही हैं? हम जो पढ़ रहे हैं उसे कक्षा–कक्ष में बतौर अपनी पाठ योजना का क्या हिस्सा बनाया जा सकता है? अथवा एक शिक्षक के लिए पढने के क्या मायने हैं? इन सब बातों पर अपनी समझ बनाने में इन समूहों से बहुत सहायता मिली। वास्तव में एक शिक्षक के लिए पढ़ना उतना ही जरूरी है जितना कि एक स्वस्थ व्यक्ति के लिए श्वसन क्रिया करना, जैसा कि कृष्ण कुमार जी का भी कहना है कि पढ़ना और पढ़ाई दोनों अलग बातें हैं, पढ़ना जो स्वाध्याय से नियमित रूप से किया जा सकता है क्योंकि एक चिंतनशील शिक्षक ही शिक्षा के समग्र विकास को मूर्त रूप से दे सकता है।

समूह में हमने "मुन्ना बुनाईवाला" कहानी पढ़ी जिसके द्वारा यह जाना और समझा कि जरूरी नहीं कि प्रत्येक कहानी या कविता कि संदेश के साथ ही तैयार की जाए। कुछ कहानियों में चरित्र पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता होती है। ठीक इसी रूप में हम बच्चों को भी कहानी के किसी चरित्र के साथ जोड़ने का प्रयास कर सकते हैं। उस पर विस्तार से चर्चा कर सकते हैं। एक लेख "चाय" पढ़ा। बहुत शानदार लेख था। इस लेख के जारिए हमने न केवल चाय की उत्पत्ति, उसका निर्माण व रसोई तक के सफर को समझा अपितु यह भी जाना कि चाय एक संस्कृति है। मैंने इस लेख को अपने दस वर्षीय बेटे को पढ़ाया तो उसे भी अत्यंत रोचक लगा। तभी मैंने सोच लिया था कि मैं इस लेख को अपने विद्यालयी बच्चों के बीच भी साझा करूंगी। "शंकर जी का पसीना व जंगल का बनना" अनुराधा जैन जी द्वारा लिखा गया यह लेख मेरे हृदय में एक विशिष्ट स्थान रखता है। इस लेख के द्वारा यह पता चलता है कि कक्षा का वातावरण इतना स्वाभाविक हो कि बच्चे स्वयं ही अपनी पारंपरिक मान्यताओं से बाहर निकलकर स्वस्थ अवधारणा का निर्माण कर सकें। शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टि से ही एक चिंतनशील समाज तैयार हो सकता है। इसके अतिरिक्त पूजा बहुगुणा जी का "शिक्षण और बच्चों की समझ" जिसमें उन्होंने अपने शिक्षण सम्बन्धी अनुभवों को साझा किया है। इनके डायरी में ये बातें भी दिखाई दी जिनसे वह सहमत नहीं थी। "शेर और कवय्या" उदयन वाजपेयी जी की कहानी बहुत संवेदनशील है, उनका कहना है कि कहानी दुनिया की सबसे अनूठी चीज होती है जो स्वयं नहीं दिखती पर न जाने कितने जीव–जंतुओं, पशु–पक्षियों को दिखा देती है। कविताओं का संग्रह भी कम सुन्दर नहीं था, 'पहाड़ अगर दौड़ता" में पहाड़ और चींटी की तुलना करके एक नई सोच को रखा गया। इसी प्रकार "धूप निकलती है", "माँ, नदी हंसती क्यों है'' तथा ''अकाल के बाद" जैसी कई कविताओं ने मन मोह लिया। "एक उत्साही शिक्षिका की डायरी" जूलिया वेबर द्वारा लिखित किताब "मेरी ग्रामीण शाला की डायरी" का एक आलेख है। यह डायरी हमें बताती है कि प्रतिकूल परिस्थिति में कैसे बच्चों के साथ काम किए जाते हैं। मैं इस पुस्तक से इतनी प्रभावित हुई कि टीएलसी काशीपुर से मैं इस किताब को पढ़ने के लिए लेकर आयी।

जिले के सृजन समूह में भी कई लेख भिन्न–भिन्न विधाओं में पढ़ने को मिले। इनमें "अनोखे घरोंदे के बाशिंदे" मधुसूदन भार्गव जी का यह लेख हमें पक्षियों के घरोंदे की दुनिया में ले गया। इस लेख को पढने के बाद मैंने इन पक्षियों के घोंसलों को अपने आस–पास ढूंढ़ने का प्रयास किया कुछ मिले भी, मतलब पढ़ना हमें अवलोकन भी सिखाता है। इसके अलावा "शिक्षक पढ़ेगा नहीं तो बढ़ेगा नहीं" शिवरतन थानवी जी का यह लेख मुझे एक शिक्षक के रूप में सर्वोत्तम लगा क्योंकि ऐसा करना मेरी समझ से अतिआवश्यक है। यदि हम पढेंगे नहीं तो हम आगे कैसे बढ़ सकते हैं।

कुल मिलाकर समूह में बहुत सारगर्भित लेख हमें पढ़ने को मिले। सबकी चर्चा तो यहां संभव नहीं है किन्तु सबके बारे में यही कहना चाहती हूं कि सब एक से बढ़कर एक आलेख हैं, उन सबको पढ़कर प्रतिक्रया लिखकर तथा उन पर साप्ताहिक चर्चा करके हमारी समझ में भी विस्तार हुआ है और बहुत कुछ सीखने को मिला।

(लेखिका राजकीय प्राथमिक विद्यालय ढकिया नं.1, काशीपुर, ऊधमसिंह नगर में सहायक अध्यापिका हैं।)